2

परमेश्वर के लिए कैदी

(2 कुरिन्थियों 2:14-17)

''क्योंकि हम उन बहुतों के समान नहीं, जो परमेश्वर के वचन में मिलावट करते हैं ...''(2:17)।

बहुत साल पहले मैं अमेरिका के राष्ट्रपति के प्रत्याशी द्वारा अपनी उम्मीदवारी का समर्थन करने के लिए समर्थकों और स्वतन्त्र लोगों, सबको अपील करते देखने व सुनने के लिए नवम्बर माह के एक सर्द दिन में हज़ारों लोगों के साथ खड़ा रहा। मुझे पूरा तो याद नहीं कि उसने क या कहा था, पर जो माहौल बनाने की कोशिश की गई थी, वह मुझे याद है। ''आशावादी'' दिखाने के लिए प्रबन्ध बड़ी अच्छी तरह से किया गया था। समर्थकों और स्वतन्त्र लोगों सबको यकीन दिलाया गया कि उनकी जीत पक्की है। योजना बनाने वालों को मालूम था कि उस शाम टैलीविज़न पर घटना के एक मिनट के भाग को देशभर के लाखों लोग देखेंगे। एक संदेश जो वे देना चाहते थे वह यह था कि यह कार्य जीत सकता है। उन्हें मालूम था कि कोई अपने आप को हारे हुए कारण के लिए शामिल नहीं करना चाहेगा।

जैसा कि पेशेवर लोगों को मालूम था, ''बैंड-बाजे वालों की गाड़ी'' वाली मानसिकता हमें अपने आप को विजय पाने वाले के साथ जुड़ने के लिए ले जाती है। आमतौर पर हमें मानना पड़ेगा कि सही कारण अपने आप में ही उनकी ओर से अपने आपको जोखिम में डाल देने से पहले सफलता के चिह्न होते हैं। हारे हुए कारणों में हमारे लिए कोई आकर्षण नहीं होता।

स्वाभाविक है कि हम कलीसिया में विजय के चिह्न को देखना चाहते हैं। विजय का पूर्वाभास संक्रामक है, जो समर्पित मसीहियों और जो समर्पित नहीं हैं, दोनों को उत्तेजित करता है। परिणाम यह होता है कि हम साकारात्मक माहौल बनाने की कोशिश करते हैं। हम हर बात में विकास की ओर संकेत देना पसंद करते हैं जिसे यह दिखाने के लिए कि विजय निकट है, नापा जा सके। हम इस वर्ष में होने वाली उपस्थिति को पिछले वर्ष की उपस्थिति से मिलाते हैं। हम चंदा देने, मन परिवर्तन के नये आंकड़ों और कलीसिया की सम्पत्ति में बढ़ोतरी की बात करते हैं। विजय के यह चिह्न यह दिखाने के लिए इस्तेमाल किए जाते हैं कि हमारा कार्यक्रम सही दिशा में है और विजय के अन्य चिह्नों को देखने के लिए हमें उत्तेजित करता है।

जैसा कि आयत 14 दिखाती है, ''परन्तु परमेश्वर का धन्यवाद हो, जो मसीह में सदा हम को जय के उत्सव में लिए फिरता है, ...।'' पौलुस विजय के रोमांच में हमारी तरह ही प्रसन्न है। कई बार हमारे अनुभव के लिए उपयुक्त शब्द केवल पौलुस वाले शब्द ही होते हैं कि ''परमेश्वर का धन्यवाद हो'' (तुलना रोमियों 6:17; 7:25)। थोड़े से विस्मय से भय के बोध का सुझाव मिलता है कि जो परमेश्वर ने यीशु में किया है। नया नियम इसमें कोई संदेह नहीं

रहने देता कि प्रामाणिक मसीहियत में केवल विस्मयों के पर्याप्त होने पर ही आश्चर्य का यह बोध होता है। यही कारण था कि आरम्भिक मसीही लोग गाकर मन की बात कहने को प्रेरित होते थे। उनमें भी पौलुस के आश्चर्य वाला बोध ही था: ''परन्तु परमेश्वर का धन्यवाद हो, जो मसीह में सदा हम को जय के उत्सव में लिए फिरता है, और अपने ज्ञान का सुगन्ध हमारे द्वारा हर जगह फैलाता है'' (2:14)।

विजयी मसीहियत

पौलुस ने मसीहियत की विजय के लिए एक रंगदार रूपक का इस्तेमाल किया है: ''... जो सदा हमको जय के उत्सव में फिरता है, ...'' यह रूपक प्राचीन रोम के विजयी जलूसों से लिया गया है। विजयी सेनापति विजय के चिह्न दिखाते हुए उनकी तारीफ करती भीड़ के साथ लौटते थे। वियज के इन प्रतीकों में युद्ध से लाए गए वादी और लूट का माल दोनों होते थे। इस कारण पौलुस ने एक विस्मय के साथ घोषणा की कि परमेश्वर के कार्य में यह अपना विजयी जुलूस है। जैसे सेनापति लोग विजय में नगर में जाते थे, वैसे ही परमेश्वर अपने लोगों को विजय में घुमाता है।

नये नियम में विजय की बात आम है। आयत 14 में अनुवादित शब्द ''जय के उत्सव में लिए फिरता'' (*thriambeuo*) का इस्तेमाल कुलुस्सियों 2:15 में क्रूस पर पाई गई मसीह द्वारा पाई गई विजय के लिए हुआ है। जहां वह कहता है, ''और उस ने प्रधानताओं और अधिकारों को अपने ऊपर से उतार कर उन का खुल्लमखुल्ला तमाशा बनाया और क्रूस के कारण उन पर जय-जय-कार की ध्वनि सुनाई।'' यह ऐसा है जैसे हम इस आश्वासन के साथ युद्ध लड़ रहे हों कि विजय पक्की है।

पौलुस की पत्री में मसीह की उस वियज के हवाले की भरमार है, जो उसने पाई। मसीह के पुनरुत्थान से निकाला गया उसका निष्कर्ष यही है कि ''परमेश्वर का धन्यवाद हो, जो हमारे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा हमें जयवन्त करता है'' (1 कुरिन्थियों 15:57।) विजय की प्रतिज्ञा उसने रोमियों 8:37 में बड़े सुन्दर कविता के शब्दों में की। वियज की घोषणा करवाता है: ''परन्तु इन सब बातों में हम उसके द्वारा जिस ने हम से प्रेम किया, है, जयवन्त से भी बढ़कर हैं।'' इसलिए विजयी मसीहियत के कारण पौलुस को एक से अधिक अवसरों पर कहलवाया, ''परमेश्वर का धन्यवाद हो!''

हमारी सेवकाइयों की मांग है कि हम भी पौलुस की तरह अन्त में परमेश्वर की विजय को पक्का मानें। निराशा भी आशा की तरह संक्रामक हो सकती है। यह हम से दूसरों को निराशा ने और बताने से रोक लेता है, जौ ''बैंड-बाजे वालों'' की गाड़ी जैसे उलटा भाव छोड़ता है। मसीही की पहचान विजयी जुलूस में भाग लेना है।

कैसी विजय?

2 कुरिन्थियों के आरम्भ से 2:14 में पौलुस के विस्मय टिप्पणी को पढ़ने वाला कोई भी व्यक्ति विजय के पौलुस के दावे के रुखेपन से चकित होना पक्का है। आयत के तुरन्त पहले, पौलुस रक्षात्मक था। उसने विभिन्न आरोपों का कि वह चंचल और अस्थिर है। उत्तर दिया है।

2:1–13 मे वह उस गहरे दुख को याद करता है, जो कुरिन्थियों के साथ उसकी सेवकाई में उसके साथ था। कुरिन्थियों के नाम पत्र उसने ''बड़े क्लेश और मन के कष्ट ... आंसू बहाकर बता कर'' लिखा था (2:4)। उसने उसके भाइयों दोनों ने दुख भोगा था (2:2, 5)। वह बताता है कि कुरिन्थी कलीसिया से उनके लगाव और उनकी समस्याओं और तीतुस से मिलकर उनकी खबर न पा सकने के कारण कब उसका मन ''उदास'' था। आयत 14 में विजय के दावे की शानदार बात यह है कि वह संक्षेप रूप में जब आता है जब वह उस असाधरण दुख और चिन्ता की बात कर रहा है, जो उसकी सेवकाई से मिला! अपनी सेवकाई के दुख का वर्णन करते हुए ही वह कहता है ''परन्तु परमेश्वर का धन्यवाद हो, जो मसीह में सदा हम को जय के उत्सव में लिए फिरता है!'' 7:5 तक वह कुरिन्थुस की अपनी कहानी को बहाल नहीं करता।

आयत 14 में वियज का पौलुस का दावा इतना अनुपयुक्त लगता है कि बाइबल के कई गंभीर छात्रों ने सुझाव दिया है कि 2:14–7:4 एक स्वतंत्र इकाई है, जो 2 से 7 अध्यायों में कलीसिया और पौलुस की चिंता के समय नहीं लिखी गई थी। मिज़ाज का बदलना ज़र्बदस्त है। हम हैरान होते हैं कि चिंता और विजय की अलगअलग मनस्थितियों को दिखाने के बावजूद यह आयतें इकट्ठी हैं।

शायद हम ने 13 और 14 आयतों के अन्तर को कुछ अधिक ही बढ़ा चढ़ाकर दिखा दिया है। पौलुस अपने आपको विजय प्राप्त करने वाले सेनापति के रूप में नहीं दिखाता जो विजय के जुलूस का नेतृत्व करता है। उसे स्वयं को कैदी की तरह ''जय के उत्सव में'' ले जाया जाता है। विजय जुलूस में कैदी के रूप में वह ''सदा'' लोगों के सामने रहता है। अपनी सेवकाई के द्वारा वह परमेश्वर के ज्ञान को ''फैलाता'' है। पौलुस की कृतज्ञता कि वह इस विजय जुलूस में कैदी की भूमिका निभा सकता है, उससे कहलवाती है कि ''परमेश्वर का धन्यवाद हो!''

यदि हम परमेश्वर के विजय जुलूस में पौलुस की भूमिका को समझते हैं तो शायद हमें 13 और 14 आयतों के बीच संबंध पर स्तब्ध न हों। यह हो सकता है कि अपनी सेवकाई के कष्ट और पीड़ा के द्वारा, जैसा कि 1:8–11 और 2:1–13 में वर्णित है, कि पौलुस परमेश्वर की विजयी शोभा यात्रा को देखता है। वह जानता है कि कलीसियाओं के लिए उसकी चिंता बेकार नहीं है। बल्कि यह उस नाटक का भाग हैं जो विजय में समाप्त होता है। वह इस काम में कैदी होने के लिए भी आभारी है।

परमेश्वर के विजयी जुलूस में अपनी भूमिका का पौलुस का विवरण उस ज़र्बदस्त रूपक का शेष है जिसे उसने 1 कुरिन्थियों 4:9 में लागू किया: ''मेरी समझ में परमेश्वर ने हम प्रेरितों को सब के बाद उन लोगों की नाईं ठहराया है, जिन की मृत्यु की आज्ञा हो चुकी हो; क्योंकि हम जगत और स्वर्गदूतों और मनुष्यों के लिए एक तमाशा ठहरे हैं।'' ''तमाशा'' के लिए यूनानी शब्द *theatron* है, जिस कारण हम पौलुस के शब्द का अर्थ ''हम जगत के लिए थियेटर बन गए हैं'' निकाल सकते हैं। यह शब्द हमें याद दिलाते हैं कि यीशु स्वयं जिसने उसे भीड़ के लिए क्रूस पर चढ़ाए देखा था एक प्रकार का ''तमाशा'' बन गया था। वह लोगों के लिए एक नमूने और अपमान के प्रतीक के रूप में मरा था। 1 कुरिन्थियों 4:9 में पौलुस के शब्दों से संकेत मिलता है कि मसीह का सेवक यीशु की तरह ही ''तमाशा'' बनने को तैयार है।

2 कुरिन्थियों में मुख्य विषयों में से एक पौलुस का दावा है कि उसकी सेवकाई की पहचान

मसीह की मृत्यु में सहभागिता है। जैसे परमेश्वर उसे ''सदा'' विजय में ले जाने वाला है वैसे ही पौलुस ''सदा'' यीशु की मृत्यु को लेकर चलता है (4:10)। वह मसीह की ''निर्बलता'' का साझी होने को तैयार है (13:4; 11:10 से तुलना करें)। परन्तु पत्री का मख्य विषय यदि निर्बलता है तो इस विषय के साथ यह दावा है कि परमेश्वर की सामर्थ निर्बलता में होती है: ''... 'सामर्थ निर्बलता में सिद्ध होती है। ...' जब मैं निर्बल होता हूं, तभी बलवन्त होता हूं'' (12:9, 10)। पौलुस का कष्ट वास्तव में परमेश्वर की विजयी यात्रा है, क्योंकि वह परमेश्वर का कैदी है।

एक विलक्षण सम्भावना है कि हमारी पुकार कि ''परमेश्वर का धन्यवाद हो जो हमें अपनी विजय में लिए फिरता है'' में उस गहराई और अनुभव की कमी होगी जो पौलुस ने बताया। हम उनके संदर्भ के बिना शब्दों के रोमांच का आनन्द ले सकते हैं। जिन विजयों की खोज हम करते हैं हो सकता है वे विजय हों जिन्हें हम परमेश्वर की अपनी सेवा के साथ आने वाले कष्टों से बचने के लिए चाहते हों। विजय के लिए हमारे आदर्श क्रूस के बजाय बाज़ार से लिए गए हो सकते हैं। पौलुस एक अजीब तरह की विजय की बात करता है पर यह विलक्षण रूप में मसीही विजय है जो क्रूस में से निकली।

पहली प्रतिक्रिया जो कलीसिया में जिम्मेदारी दिए जाने के बाद आम तौर पर हमारी होती है वह हमारे सामने अनेक प्रकार की समस्याओं के आने पर हमारी निराशा है; वह उर्जा जो हम शांति बनाए रखने के लिए खर्च करते हैं, वे प्रयास जिन्हें हम उदासीन मसीही लोगों की सेवा में लगाते हैं और ऐसे काम जो अधिक रोमांचकारी नहीं हैं। इनमें से कोई भी भूमिका जो हम लेने की कल्पना करते हैं विजय जुलूस की तरह नहीं लगती। आम तौर पर हम इस काम के साथ मिलने वाले दुख को पाने के लिए तैयार नहीं होते। परन्तु पौलुस सुझाव देता है कि परमेश्वर की सामर्थ हमारे धन्यवाद रहित कामों के द्वारा भी काम कर सकती है। हमें भी विजय जलूस में अपनी भूमिका मिली है।

कई मामलों में हम इस आश्वासन में रह सकते हैं कि हमारी सेवकाइयां परमेश्वर के विजय जलूस का भाग हैं जबकि हो सकता है कि हम विजय के इन चिह्नों का इस्तेमाल न कर सकें। हर मसीही अगुवे को किसी भी विजय जिसमें वह भाग लेता है निश्चित्ता पर सवाल और संदेह करने की निराशाएं होती हैं। जिन लोगों पर हम निर्भर होते हैं वही हमें निराश कर सकते हैं और एक दूसरे को प्रोत्साहित करने के लिए हमारे प्रयास का हो सकता है कि परिणाम दिखाई न दे। परन्तु विजयी पल आ सकते हैं जिन से सच्चा आनन्द मिले। वास्तव में पौलुस का ''परमेश्वर का धन्यवाद हो जो हम को जय के उत्सव में लिए फिरता है'' कष्ट की उसकी कहानी में रुकावट डाल सकता है क्योंकि उसे मालूम था कि उसके व्याकुल मन को (7:5) अन्त में शांत किया जाएगा और तीतुस द्वारा यह खुशखबरी लाने पर कि कुरिन्थियों से प्रोत्साह मिलेगा। वह कहता है, ''... उसके आने से परन्तु उस की उस शान्ति से भी, जो उस को तुम्हारी लालसा, और तुम्हारे दुख और मेरे लिए तुम्हारी धुन का समाचार हमें सुनाया, जिस से मुझे और भी आनन्द हुआ'' (7:7)। पौलुस की सेवकाई ने उसके परिश्रम से मिले कुछ परिणामों को देखकर उसे आनन्द दिया था।

मसीह की महक

विजय जुलूस परेड की तरह एक शानदार तमाशा था, जो आनन्द देने वाली झांकियों के साथ संदेश देता था। वर्दीधारी सेनापतियों और सिपाहियों द्वारा पकड़े गए मानकों का एक बड़ा दिखाई देने वाला संदेश था। परन्तु इस ''तमाशे'' के अलावा विजय की ''सुगंध'' भी थी। धूप के जलने से हवा महक गई थी जिससे लोगों में विजय का संदेश गया। यह रूपक पौलुस का यह कहने की अनुमति देता है कि उसकी सेवकाई में ''हवा में'' ''विजय की गंध'' थी और वह एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा था।

सुगंधियों के रूपक का बाइबल तथा अन्य यहूदी साहित्य में महत्वपूर्ण योगदान था। कई बार परमेश्वर के वचन की तुलना इत्र से की गई। कई अन्य घटनाओं में कहा गया कि परमेश्वर को भेंट किए गए बलिदान सुखदायिक सुगंध थे (देखें 8:21; निगर्मन 29:18; लैव्यव्यवस्था 1:9)। इस कारण नये नियम में कहा गया कि मसीह का बलिदान परमेश्वर को ''सुखदायक सुगंध'' था (इफिसियों 5:2)। आयत 14 के अनुसार ''उसके ज्ञान की सुगंध'' संसार में फैलाई जा रही है। यीशु की कहानी जहां भी बताई जाती है वहीं यह ''विजय की सुगंध'' फैलाई जा रही है। उसके क्रूस की कहानी उद्धार के लिए मसीही लोगों के लिए परमेश्वर की बड़ी सामर्थ है (1 कुरिन्थियों 1:13-25; तुलना रोमियों 1:14-17)। इस कारण वह सुगंधी जो फैलाई जा रही है उसमें उन लोगों के लिए जीवन और सामर्थ का संदेश है जो उद्धार पा रहे हैं (2:16), और इसमें उन लोगों के लिए जो नाश होते हैं, पराजय की बदबू भी है (2:16)।

इस प्रभावकारी रूपक के साथ पौलुस यह संदेश देना चाहता है कि क्रूस की कहानी संसार का सबसे निर्णायक संदेश है इसमें अनन्त महत्व, जीवन और मृत्यु के मामले में इसलिए शानदार विजय जुलूस इसकी तुलना में कुछ भी नहीं।

2 कुरिन्थियों का मुद्दा। इस निर्णाय घटना में दूत और उसकी भूमिका है। रक्षात्मक होकर पौलुस उन लोगों को जवाब दे रहा है जो दावा करते हैं कि वह बहुत निर्बल और अयोग्य है, यदि बेईमान न भी कहें, कि वह सेवकाई को गम्भीरता से ले जा सके। पौलुस जानता है कि यीशु केवल ईश्वरीय सुगंधि ही नहीं है। कई बार जैसा कि वह फिलिप्पियों से कहता है, हमारा थोड़ा सा योगदान और दान परमेश्वर को ''सुहावने'' और ''मनभावने'' हैं (फिलिप्पियों 4:18)। हमारे पूरे जीवन परमेश्वर को ''जीवित बलिदान'' हो सकते हैं (रोमियों 12:1)। फिलिप्पियों 2:17 में पौलुस तस्वीर के ढंग से इस बात को कहता है जब वह अपने आपको ''तुम्हारे विश्वास के बलिदान और सेवा के साथ अपना लोहू भी बहाने ...'' वाला होने के रूप में वर्णित करता है। मसीह के दूतों को बलिदान के रूप में उण्डेला जाता है।

उनके लिए जिन्होंने पौलुस की निष्ठा और विश्वसनीयता पर संदेह किया था, उसके चौंका देने वाला दावा यह है कि परमेश्वर के विजयी जलूस में उसे एक महत्वपूर्ण भूमिका मिली है। पौलुस कहता है कि परमेश्वर मसीह कहानी की ''सुगंध हमारे द्वारा हर जगह फैलाता है'' (*osme*, 2:14) और मसीही लोग मसीह की ''सुगंध'' हैं (*euodia*, 2:15)। पौलुस ने मसीह के क्रूस को जहां भी बांटा अपने प्रभु की तरह ''विजय की सुगंध'' और वह महक जो परमेश्वर तक जाती है बना।

एक बड़े विजयी जुलूस में जिसका महत्व था परमेश्वर के माध्यम होने का दावा करना

चौंका देने वाली बात है। इसी कारण पौलुस पूछता है, ''इन बातों के लिए उपयुक्त [*hikanos*] कौन है?'' स्पष्ट उत्तर है, ''कोई नहीं।'' यह प्रश्न उसकी ओर से है जो इस जिम्मेदारी से अभिभूत है कि यह उसके लिए बहुत बड़ी बात है। वह जानता है कि परमेश्वर की महक होना बहुत बड़ी ज़िम्मेदारी है। 3:5, 6 में पौलुस इस प्रश्न का अपना उत्तर देता है: ''... हमारी योग्यता [*hikanotes*, मूलतया, ''क्षमता''] परमेश्वर की ओर से है, जिस ने हमें नई वाचा के सेवक होने के योग्य भी किया ...।''

फेरी वाले न होने पर

यदि पौलुस रक्षात्मक न होता तो उसने अपनी सुगंधी फैलाने की विशेष बात नहीं करनी थी। जैसा कि 2:17 से पता चलता है कि उसकी वास्तविक चिंता इस आरोप का उत्तर देना था कि वह परमेश्वर के वचन का ''फेरी वाला'' है। इस आयत में पौलुस का इनकार यह सुझाव देता है कि हर मसीही अगुवे की तरह पौलुस को अपनी गम्भीरता से संदेहों पर जय पानी आवश्यक है।

''मिलावट करने वाले'' (*kapeleuontes*) के लिए पौलुस का शब्द प्रचून व्यपारी के लिए जो अपना सामान थोक विक्रेता से लेकर उससे लाभ पर बेचता था के लिए आम शब्द था। प्रचून व्यपारी आम तौर पर चीज़ों में मिलावट करके अपने लाभ को बढ़ा लेते थे इसलिए ''फेरी वाला'' शब्द जोड़ा था। कई बार इस शब्द का इस्तेमाल पानी मिलाकर मैय बेचने वालों के लिए इस्तेमाल किया जाता था। दार्शनिक लोग इस शब्द का इस्तेमान उन शिक्षकों के लिए करते थे जो धन के लिए अपने संदेश को बेचते थे, कई बार निजी लाभ के लिए संदेश को प्रचून कारोबार में ''फेरी वाला'' होते थे और ''फेरी वाला'' जो सच्चाई सिखाने का दवा करते थे। फेरी वाला आदमी वह होता था जिसका उस चीज़ में निजी लगाव नहीं होता था। उसे उस चीज़ तक उसका समर्पण नहीं बल्कि लोभ और अभिलाषा लेकर आती थी।

न्यू इंग्लिश बाइबल में 2:17 को सही अनुवाद किया गया है: ''हम परमेश्वर के वचन को बेचने के लिए फेरी पर नहीं जाते।'' बेशक वचन के भाड़े के टट्टू हैं जिनके लिए मसीह की कहानी बेची जाने वाली चीज़ थी जिससे उन्हें लाभ की उम्मीद हो। ऐसे लोग रहते हैं जो ''बिकाऊ'' होते हैं। यह स्थिति हर जगह होती है जहां लोग उस काम में जिसमें वह लगे हों भय और आश्चर्य के बोध खो देते हैं। यदि हम परमेश्वर की सेवा में ''विजय की सुगंध'' को न देख पाएं तो हमारी सेवकाई किसी भी अन्य काम की तरह बन जाती है। जो लोग अपने आपको विजयी जुलूस में परमेश्वर के दासों के रूप में देखते हैं, उनके लाभ के लिए ''परमेश्वर के वचन को पाना'' सोचा भी नहीं जा सकता।

सारांश

हमारे समय में सेवकाई पर अनिष्ठावाद का उत्तर परमेश्वर की योजना में अपने स्थान के दर्शन को पकड़ना है। परमेश्वर के सभी सेवकों के निजी बलिदानों से ही हो सकता है कि इस कहानी की सुगंध फैले। हम किसी बेकार काम में नहीं लगे हुए हैं; यानी जो सुगंध हम फैलाते हैं उसमें जीवन और मृत्यु की बात है। जिस पीड़ा और क्लेश को हम साझा करते हैं वह मसीह के क्रूस में भागीदार होना है। अपने सीमित क्षेत्र में निभाई गई हमारी भूमिका से लग सकता है

कि कोई परिणाम नहीं मिला। परन्तु यह उसके ज्ञान की सुगंध ''हर जगह'' फैलाने का भाग है (2:14)।

लोग फेरी वाले जब बन जाते हैं जब वे अपने काम में किसी विशेष महिमा को नहीं लेते। परन्तु मसीह की सेवा में वास्तव में ''पकड़ा गया'' कोई भी व्यक्ति सुसमाचार को बेचे जाने वाली चीज़ नहीं समझेगा। ''वचन को बेचने'' की बात सोची भी नहीं जा सकती यदि वह वचन विजयी मार्च हो जो हमें अपनी सेवा में लेता है। इसलिए मसीह की पहचान यह है कि वह एक कारर्ण के द्वारा जो उससे बड़ा है ''पकड़ा गया'' और ''बंदी बनाया गया'' है। यह कहानी व्यपारी के सामान की तरह किसी चीज़ को बेचने और खरीदने की नहीं है। मसीही व्यक्ति अपने आचरण से यह दिखाते हुए कि उसे कहानी के द्वारा पकड़ा गया है, ''मसीह की सुगंध'' है।